नदी को अगर कोई उपमा शोभती है तो वह माता की है। नदी के तीर पर रहने से अकाल का डर तो रहता ही नहीं। जब मेघराज हमें धोखा देते हैं, तब नदीमाता ही हमारी फसल पकाती है। नदी का तट शुद्ध्‍ और शीतल हवा का होता है। उसके किनारे-किनारे घूमने-फिरने जाएँ तो प्रकृति की मातृवत्सलता के अखंड प्रवाह के दर्शन होते हैं। नदी बड़ी हो और उसका बहाव धीर-गंभीर हो, तब उसके तट पर रहने वालों की शान-शौकत और खूशहाली उस नदीपर ही निर्भर रहती हैं।

जब हम किसी नदी के किनारे पर आबाद शहर की गलियों में घूम रहें हो औंर एकाध कोने से कहीं नदी की झलक देखने को मिल जाए उस समय हमें कितना आनंद होता है। नदी ईश्वर नहीं है, पर ईश्वर का स्मरण कराने वाली देवी जरूर है। अगर गुरू को नमन करना उचित हैतो नदी की भी वंदना करना उचित है।

यह तो हुई सामान्य नदी की बात। गंगा मैया तो समाज की माता है।कई बड़े-बड़े साम्राज्य इसके तटपर स्थापित हुए है। आज भी हिंदुस्तान की अधिकांश आबादी गंगा के तट पर है। हम गंगा के दर्शन करते हैं तब हरे, लहलहाते खेत ही हमारे ध्यान मेंन ही आते, उनके साथ वाल्मीकी के अमर काव्य, महावीर के विहार इन सब का भी स्मरण होता है।